''वे नाम सुरती धारा''

आरती संग्रह

साहिब सत्तपुरूष सुरती महिमां गुणगान

सतगुरू सत्तनाम

सत्त साहिब जी   सत्त साहिब जी   सत्त साहिब जी

''वे नाम सुरती धारा''

आरती संग्रह

सतगुरू सत्तनाम

सत्त साहिब जी सत्त साहिब जी सत्त साहिब जी

सतगुरू सतनाम सत्त साहिब जी सत्त साहिब जी सत्त साहिब जी

सतगुरू 'वे नाम' परमहंस साहिब जी की सुरति से ओत प्रोत ग्रंथों की सूची

क्र:	ग्रंथों के नाम	प्रकाशन वर्ष
1	भजन संग्रह–1 (प्रथम पुस्तक)	2013
2	भजन संग्रह–2 अमर सुरति से भरे भजन	2015
3	भजन संग्रह–3 सतगुरू जी की अमर सुरति से भरे भजन	2017
4	भजन संग्रह–4 साधकों द्वारा श्रद्धा सुमन	2017
5	अमर साग़र	2017
6	परमहंस सुरति महिमां	2019
7	**Secret Of Permament Liberation (English)** मोक्ष का भेद ग्रंथ (अंग्रेज़ी में)	2020
8	आनंद साग़र – वे नाम सुरति धारा	2022
9	गीता अमृत सार – वे नाम सुरति धारा	2022
10	अल्प मुक्ति से पूर्ण मोक्ष	2022
11	वे नाम सुरति धारा	2022
12	अनुराग़ साग़र	2022

अग़ामी प्रकाषित होने वाले ग्रंथ

1 अनुराग़ साग़र
2 साहिब सतगुरू जी के अनुभव और सफरनामें
3 साहिब सतगुरू जी के कर कमलों द्वारा लिखित ग्रंथ

काल भगवन के खेल से बचो, बचावनहार एको सतगुरू 'वे नाम'

'वे नाम परमहंस जी' कहत हैं :–

1 लिखावनहार कोई और है,
वे नाम है दास–दीन।
सतपुरूष सूं अमृत जब बरसे,
लेखनी बने हदीम ।।

2 करन करावनहार सतपुरूष हैं,
दास सतपुरूष आगे अधीन ।
वे नाम को सब कुछ सौंप कर,
परमहंस की महिमां दीन ।।

3 हम सब हंसा अमरपुर वृक्ष सूं आए,
निरंझन जिनके ढाल ।
सब हंसा पात फूल उस वृक्ष के,
खुशबू देना भूल निज काम ।।

4 वे नाम आया सतलोक सूं,
हर एक को दे पुकार ।
आओ चलें सतलोक को,
वे नाम देत पुकार ।।

—0—

आत्म बंधन (कुल्फ़ कवाड़ा)

1 औंकार का कुल्फ़ कवाड़ा, जीवों को लगता बड़ा प्यारा।
यह भेद पूर्ण संत जानत हैं, होते जो साहिबन प्यारे।
सुरति आत्म बंध पड़ी हृदय में, लाखों जन्म से प्यारो।
आत्म परमात्म नहीं प्यारो, यह तो सतपुरूष का अंश प्यारा।
सार सब्द है कुँझी कुल्फ़ की, पूर्ण संत इसका रखवारा।
लाखों जन्म का बंधन टूटे, जब खुले कुल्फ़ कवाड़ा।
मन औंकार काल निरंझन एको, जिस दियो कुल्फ़ कवाड़ा।
सत्तपुरूष का अंश है आत्म, जाने पूर्ण सतगुरू प्यारा।
जब कोई पाता दात पारस सुरति की, खुलता कुल्फ़ कवाड़ा।
यह कार्य पूर्ण सतगुरू करता, होता जो साहिबन प्यारा।
साधक को झुकना जब आता, पल में खुल जाता कुल्फ़ कवाड़ा।
सुरति निरति मूल सब्द से, आत्म से बने हंसा प्यारी।
आत्म के सब बंधन टूटे, साधक गुरू संग पावे निजघर प्यारा।
अब टूटा औंकार का कुल्फ़ कवाड़ा, जब मिला सतगुरू प्यारा।
ये भेद 'वे नाम जी' देते हैं, जिन पायो साहिबन प्यारा।।

2 आत्म अंश साहिबन की, ताला औंकार का जाने संत प्यारा।
ताला औंकार रूपी मन का, घट में बंध आत्म सुरति प्यारो।
सार सब्द कुँझी ताले की, खोले कोई पूर्ण संत प्यारा।
सुरति छूटे सब्द ईक करे निरति से, ऐसा सब्द हमारा।
आत्म से सब्द करे हंसा, 'वे नाम सब्द' साहिबन प्यारा।

—0—

आरती सतगुरू जी की – 1

जय–जय–जय सतगुरू देवा, दाता जय सतगुरू देवा
जो ध्यावे निज–घर पावे – 2, करे सतगुरू चरणन सेवा ... साहिबा

1 बिन मांगे प्रेम–धारा बहती, आनंदित हर पल करती देवा ...साहिबा
गुणगान से सुरती चेतन धारा – 2, भक्ति प्रार्थना जगाती देवा ... साहिबा

2 जो ध्यावे सुरती चेतन हो जावे, करे सतगुरू चरणन सेवा ... साहिबा
''धैर्य प्यास'' प्रेम जगाते – 2, आरती गाने से अंग–अंग चेतन देवा ... साहिबा

3 ''वे नाम सब्द'' से सुरती चेतन, इस पल में बहती धारा ... साहिबा
आरती की धारा–धारा में – 2, जान वासा सतपुरूष देवा ... साहिबा

4 ''सब्द विदेह'' ज्ञान ध्यान उपझाऐ, तीन लोक से पार करायें देवा ... साहिबा
काम–क्रौध–मद्य–लोभ–मोह विसारे – 2, मन–माया का संग छूटा देवा ... साहिबा

5 साहिबन आदि अंत मध्य नांहि, रूप रेखा वर्णन से बाहिरा देवा ... साहिबा
''निःसब्द'' अज्ञान–निंद्रा छुड़ावे – 2, हर पल सुरती में वासा देवा ... साहिबा

6 सतगुरू बिन ज्ञान ध्यान मोक्ष ना होवे, ''वे नाम'' भेद देत सतगुरू देवा ... साहिबा
सतगुरू चरणामृत जीवन मोक्ष की धारा 2,पूर्ण चेतन सुरती करती तन मन देवा.. साहिबा

7 मन–माया हर सुरती को घेरा, पल–पल भटकाते देवा ... साहिबा
''वे नाम'' सब्द सुरती जहाज चढ़ा कर – 2, संग निजघर ले लेते देवा ... साहिबा

8 सतगुरू दीन बंधु मन हरते, पल–पल रक्षक देवा ... साहिबा
विषय विकार मिटावें – 2, आप ही दर्शक देवा ... साहिबा

9 आप ही सुरत–कमल के दाता, पल–पल सुरती रक्षक देवा ... साहिबा
मोक्ष पद सतगुरू कृपा सूं – 2, समर्पण सब काम करता देवा ...साहिबा

10 इस पल में रहने से प्यारो, सत्त प्रेम आनंद धारा बहती देवा ... साहिबा
प्रेम प्रार्थना अंदर चलती – 2, ईक चक्की समान देवा ... साहिबा

11 सेवा सिमरन संकल्प आग प्यारो, पल में मन मान शांत होता देवा ... साहिबा
सुरती में सब्द चेतना बहती – 2, इस पल में बहती सुरती धारा देवा ... साहिबा

12 आरती की चक्की चलती रहती, तीन लोक का खेल छुड़ावें देवा ... साहिबा
मन मान की रसरी जल गई प्यारो – 2, ''सब्द दान'' से बंधन छुड़ावें देवा ... साहिबा

13 अमरलोक में स्वागत प्यारो, देरी का कारण भी पूछते देवा ... साहिबा
पूर्ण मोक्ष सतगुरू कृपा सूं – 2, महांफल पाया देवा ... साहिबा

जय–जय–जय सतगुरू देवा, दाता जय सतगुरू देवा
जो ध्यावे निजघर जावे – 2, करे सतगुरू चरणन सेवा ... साहिबा

आरती चौथे राम जी की – 2

जय राम जय राम जय राम जी – जय राम जय राम जय राम जी
सांचा नाम सांचा नाम तेरो नाम जी – सांचा नाम सांचा नाम तेरो नाम जी

1 तुझ में राम मुझ में राम सब में राम जी – तुझ में राम मुझ में राम सब में राम जी
जय राम जय राम जय राम जी – जय राम जय राम जय राम जी

2 तेरो नाम तेरो नाम प्यारा नाम जी – तेरो नाम तेरो नाम प्यारा नाम जी
जय राम जय राम जय राम जी – जय राम जय राम जय राम जी

3 उपर राम नीचे राम सब में राम जी – उपर राम नीचे राम सब में राम जी
जय राम जय राम जय राम जी – जय राम जय राम जय राम जी

4 मेरे राम तेरे राम सब के राम जी – मेरे राम तेरे राम सब के राम जी
जय राम जय राम जय राम जी – जय राम जय राम जय राम जी

5 गाओ राम सुनो राम प्यारा नाम जी – गाओ राम सुनो राम प्यारा नाम जी
जय राम जय राम जय राम जी – जय राम जय राम जय राम जी

6 सांचो नाम सत्त नाम तेरो नाम जी – सांचो नाम सत्त नाम तेरो नाम जी
जय राम जय राम जय राम जी – जय राम जय राम जय राम जी

जय राम जय राम जय राम जी – जय राम जय राम जय राम जी
सांचा नाम सांचा नाम तेरो नाम जी – सांचा नाम सांचा नाम तेरो नाम जी

—0—

आरती चौथे राम जी की – 3

असी तेरे तेरे तेरे राम जी तेरे होये आं – असी तेरे तेरे तेरे राम जी तेरे होये आं
असी तेरे तेरे तेरे राम जी तेरे होये आं – असी तेरे तेरे तेरे राम जी तेरे होये आं

1 असी तेरे तेरे तेरे साहिबा तेरे होये आं – असी तेरे तेरे तेरे साहिबा तेरे होये आं
असी तेरे तेरे तेरे राम जी तेरे होये आं – असी तेरे तेरे तेरे राम जी तेरे होये आं

2 असी तेरे तेरे तेरे असी तेरे संत जी तेरे – असी तेरे तेरे तेरे असी तेरे संत जी तेरे
असी तेरे तेरे तेरे राम जी तेरे होये आं – असी तेरे तेरे तेरे राम जी तेरे होये आं

3 असी तेरे तेरे तेरे असी तेरे सतगुरू तेरे – असी तेरे तेरे तेरे असी तेरे सतगुरू तेरे
असी तेरे तेरे तेरे राम जी तेरे होये आं – असी तेरे तेरे तेरे राम जी तेरे होये आं

4 असी तेरे तेरे तेरे निरलम्भ राम जी तेरे – असी तेरे तेरे तेरे निरलम्भ राम जी तेरे
असी तेरे तेरे तेरे राम जी तेरे होये आं – असीतेरे तेरे तेरे राम जी तेरे होये आं

5 असी तेरे तेरे तेरे असी सतपुरूष जी तेरे – असी तेरे तेरे तेरे असी सतपुरूष जी तेरे
असी तेरे तेरे तेरे राम जी तेरे होये आं – असी तेरे तेरे तेरे राम जी तेरे होये आं

6 असी तेरे तेरे तेरे असी तेरे दाता तेरे – असी तेरे तेरे तेरे असी तेरे दाता तेरे
असी तेरे तेरे तेरे राम जी तेरे होये आं – असी तेरे तेरे तेरे राम जी तेरे होये आं

7 तेरे चरणा दे नल लग के – संत जी तेरे होये आं – 2
असी तेरे तेरे तेरे राम जी तेरे होये आं – असी तेरे तेरे तेरे राम जी तेरे होये आं

8 तेरी ज्योति विच मिल के साहिब जी – असी हुण तेरे होये आं – 2
असी तेरे तेरे तेरे राम जी तेरे होये आं – असी तेरे तेरे तेरे राम जी तेरे होये आं

असी तेरे तेरे तेरे राम जी तेरे होये आं – असी तेरे तेरे तेरे राम जी तेरे होये आं
असी तेरे तेरे तेरे राम जी तेरे होये आं – असी तेरे तेरे तेरे राम जी तेरे होये आं

—0—

आरती चौथे राम जी की – 4

जय राम जय राम जय राम जी – जय राम जय राम जय राम जी

सांचा नाम सांचा नाम प्यारा नाम जी – सांचा नाम सांचा नाम प्यारा नाम जी

1 तीन लोक से प्यारे राम – निरालम्भ राम जी – 2
2 चौथे लोक के प्यारे राम – न्यारे राम जी – 2 –– जय राम ––
3 सत्तलोक के प्यारे राम – न्यारे राम जी – 2
4 तीन लोक से आगे रहते – अमरपुर में जी – 2 –– जय राम –––
5 अमर लोक हंसों का प्यारा – न्यारा लोक रे – 2
6 सत्त लोक के वासी सारे – पड़े काल वस जी – 2 –– जय राम ––
7 हर दम गाओ प्यारा नाम – प्यारा नाम जी – 2
8 तेरे अन्दर हर दम रहते – प्यारे राम जी – 2 –– जय राम –––
9 स्वांस स्वांस में वासा राम जी – यह तुम जानो रे – 2
10 तुम भी बोलो मैं भी बोलूं – सारे बोलो रे – 2 –– जय राम –––
11 बिन सत्तगुरू ना जानो राम जी – ना पाओ राम रे – 2
12 सत्तगुरू भक्ति कर लो प्यारे – पा लो राम रे – 2 –– जय राम –––
13 पाओ राम गाओ राम – सुनो राम रे – 2
14 अँग–सँग तेरे राम हैं रहते – जानो राम रे – 2 –– जय राम –––
15 रोम रोम साहिब ज्योत सरूपी – ऐसे राम रे – 2
16 बिन मोल बिन तोले मिलते – सब कोई जाने रे – 2 –– जय राम –––
17 हँसा साहिब का अंश प्यारे – पाओ राम रे – 2
18 मन की आँख सूं देख ना पाओ – सुरति में आँख रे – 2 –– जय राम ––
19 सुरति सूं निरति जब मिलती – मूल सुरति बनती रे – 2
20 मैं भी बोलूं तुम भी बोलो – सारे बोलो रे – 2 –– जय राम –––
21 आशा–तृष्णा को तज डालो – पल में पा लो रे – 2
22 हर कर्म फूल समान बनाओ – पल में पाओ रे – 2 –– जय राम –––
23 प्रेम को जानो प्रेम ही पाओ – प्रीत ही बांटो रे – 2
24 सत्तपुरूष हैं प्रीत की ज्योति – यह तुम जानो रे –2 –– जय राम –––
25 सार सब्द की दात को पा लो – उसी में राम रे – 2
26 अंतिम क्षण में याद राम जब – हँसा हो जाओ रे – 2 –– जय राम –––
27 आशा–तृष्णा खो जाएं जब – राम समाते रे – 2
28 मन माया का संग गया तो – राम रह जाते रे – 2 –– जय राम –––
29 राम भक्ति बिन नहीं निस्तारा – यह तुम जानो रे – 2

जय राम जय राम जय राम जी – जय राम जय राम जय राम जी

सांचा नाम सांचा नाम प्यारा नाम जी –सांचा नाम सांचा नाम प्यारा नाम

आरती चौथे राम जी की – 5

जय राम जय राम जय राम जी – जय राम जय राम जय राम जी – २
निरलम्भ राम निरलम्भ राम निरलम्भ राम जी – जय राम जय राम जय राम जी

1 चौथे लोक के प्यारे राम, न्यारे राम जी – २ जय राम
2 सांचा नाम सांचा नाम, तेरो नाम जी – २ जय राम
3 तुझ में राम मुझ में राम, सब में राम जी – २ जय राम
4 तेरो नाम तेरो नाम, प्यारा नाम जी – २ जय राम
5 उपर राम नीचे राम, निरलम्भ राम जी – २ जय राम
6 मेरे राम तेरे राम, सब के राम जी – २ जय राम
7 गाओ राम सुनो राम, चौथे राम जी – २ जय राम
8 मन कारण सुरति नहीं जगती, बिन सुरति नहीं राम – २ जय राम
9 निजधाम के प्यारे राम, न्यारे राम जी – २ जय राम
10 सुरति निरति स्वांस में डालो, संग में सार नाम – २ जय राम
11 सतगुरू सूं भेद को जानो, स्वांस स्वांस में नाम – २ जय राम
12 बिन सुरति आत्म नहीं जगती, बिन आत्म नहीं राम – २ जय राम
13 आठों पहर सुरति में रहना, संग में प्यारा नाम – २ जय राम

जय राम जय राम जय राम जी – जय राम जय राम जय राम जी – २
निरलम्भ राम निरलम्भ राम निरलम्भ राम जी – जय राम जय राम जय राम जी

–0–

आरती चौथे राम जी की – 6

जय राम जय राम जय राम जी – जय राम जय राम जय राम जी
सांचा नाम सांचा नाम सांचा नाम जी – सांचा नाम सांचा नाम सांचा नाम जी

1	तीन लोक से आगे रहते	– निरलम्भ राम जी	–	२	जय राम
2	चौथे लोक के प्यारे राम	– न्यारे राम जी	–	२	जय राम
3	सत्त लोक के वासी सारे	– पड़े काल वस जी	–	२	जय राम
4	अमर लोक हंसों का प्यारा	– न्यारा लोक जी	–	२	जय राम
5	हर दम गाओ प्यारा नाम	– निरलम्भ राम जी	–	२	जय राम
6	तेरे अन्दर हर दम रहते	– प्यारे राम जी	–	२	जय राम
7	स्वांस स्वांस में वासा राम जी	– यह तुम जानो रे	–	२	जय राम
8	तुम भी बोलो मैं भी बोलूं	– सारे बोलो रे	–	२	जय राम
9	बिन सत्तगुरू ना जानो राम	– ना पाओ राम रे	–	२	जय राम
10	सत्तगुरू भक्ति कर लो प्यारे	– पा लो राम रे	–	२	जय राम
11	अँग–सँग तेरे राम हैं रहते	– जानो राम रे	–	२	जय राम
12	सुरति की आंख सूं देखो राम	– गाओ राम रे	–	२	जय राम
13	सार सब्द की दात को पा लो	– उसी में राम रे	–	२	जय राम
१४	अंतिम क्षण में साथ नाम जब	– हँसा हो जाओ रे	–	२	जय राम
१५	सत्तगुरू भक्ति बिन नहीं निस्तारा	– यह तुम जानो रे	–	२	जय राम

जय राम जय राम जय राम जी – जय राम जय राम जय राम जी
सांचा नाम सांचा नाम सांचा नाम जी – सांचा नाम सांचा नाम सांचा नाम जी

–0–

आरती साहिब जी – 7
(भाग–1)

असी तेरे तेरे तेरे साहिबा, हम सब तेरे होये हैं–2
तेरे तेरे तेरे तेरे ,साहिबा हम सब तेरे होये हैं–2
कोई नहीं आत्म बांधने वाला, आत्म निज को बांधा है–2 तेरे तेरे तेरे –

1 अमर जोत का दिया जला कर, हम सब तेरे होये हैं–2
कोई नहीं आत्म बांधने वाला, आत्म निज को बांधा है–2 ... तेरे तेरे तेरे –

2 अमर लोक सूं हंसा सब आये, अमर लोक के वासी हैं–2
कभी ना मरने वाले हंसा, सत्यपुरूष के प्यारे हैं–2 ... तेरे तेरे तेरे –

3 तीन लोक में खेलने आये, जहां मन ही राजा है–2
''सार सब्द'' बिन बात बने ना, जो सुरति का राजा है–2 ...तेरे तेरे तेरे –

4 हम सब सत्यपुरूष के अंश प्यारे, उनकी आंखों के तारे हैं–2
वे पल पल पुकार हैं देते, माया कारण सुन नहीं पाते हैं–2 ...तेरे तेरे तेरे –

5 हम ही कचरा नहीं जलाते, जो सब मान के कारण हैं–2
कल और कल में जाना कचरा, इस पल से पार हो जाना है–2 ...तेरे तेरे तेरे –

6 मोह माया का बंधन धोखा, मन ने जाल रचाया है–2
आशा तृष्णा का बंधन धोखा, मन ने खेल रचाया है– 2 ...तेरे तेरे तेरे –

7 जग कर्मों का जानो बंधन, काल ने खेल रचाया है–2
सुरति सब्द से तोड़ो बंधन, सतगुरू भेद बताया है– 2 ...तेरे तेरे तेरे –

8 तज दे कल और कल में जाना, सुरति सब्द का खेल न्यारा है–2
तूं जो सुरति जोत अमर है, सुरति खेल प्यारा है–2 ...तेरे तेरे तेरे –

9 क्युं आया कहां से आया, सब सतगुरू सूं जाना है–2
हम सब सतपुरूष के प्यारे हंसा, बेगमपुर ठिकाना है–2 ...तेरे तेरे तेरे –

10 सत्त सब्द को पाकर प्यारे, हंसा रूप को पाना है–2
सुरति सब्द स्वांसा के जोड़ से, सुरत कमल में जाना है–2 ...तेरे तेरे तेरे –

11 सोलहं सूरज की जोत को पाकर, विहंगम चाल को पाना है–2
सतगुरू का संग पाकर प्यारे, निजघर को जाना है–2 ...तेरे तेरे तेरे –

12 सब परमहंसा से मेल है होता, अमृत प्याला पी जाते हैं–2
आने में क्यों देर करी प्यारे, यह सब पूछा जाता है–2 ...तेरे तेरे तेरे –

13 सतगुरू को दण्डवत करके, कोटि कोटि प्रणामा है–2
जोत में जोत मिल जावे, सच्ची प्रीत में वासा है–2 ...तेरे तेरे तेरे –

असी तेरे तेरे तेरे साहिबा, हम सब तेरे होये हैं–2
तेरे तेरे तेरे तेरे ,साहिबा हम सब तेरे होये हैं–2
कोई नहीं आत्म बांधने वाला, आत्म निज को बांधा है–2 ...तेरे तेरे तेरे –

–0–

आरती साहिब जी – 8
(भाग–2)

तेरे तेरे तेरे तेरे, साहिबा हम सब तेरे होये हैं–2
अमर जोत का दिया जला कर–2, हम सब तेरे होये हैं–2
कोई नहीं आत्म बांधने वाला, आत्म निज को बांधा है–2 ... तेरे तेरे तेरे –

1 पूर्ण मोक्ष का अमृत पाकर, निज को पहचाना है–2
सुरति में सत्त सब्द को ध्या कर, मन का मान मिटाना–2
तेरे नूरी रूप को पाकर साहिबा, हंसा रूप को धारा है–2 ...तेरे तेरे तेरे–

2 चांद चकौर सी प्रीत हमारी, पल को भी ना टूटे ताड़ी–2
खाली कर दिया आत्म मन सूं, हंसा रूप को धारा है–2
तूं ही अंदर–तूं ही बाहिरा, किया तूने ठिकाना है–2 ... तेरे तेरे तेरे –

3 प्रेम गली अति सांकरी प्यारो, मन मान का प्रवेश तहां नांहि–2
आशा तृष्णा का संग छूटा, लागी सतगुरू सूं ताड़ी है–2
सच्चे सतगुरू सूं नाता जोड़ा, चरणों में अमृत साग़र है–2 ... तेरे तेरे तेरे –

4 इस पल में रहना सीखा, सुरति सूं अमृत पाया है–2
निःअक्षर सब्द में साहिबन वासा, दूजा मन आन समाया है–2
सुरति में हर पल जाकर, सत्त का दीप जलाया है–2 ... तेरे तेरे तेरे –

5 बहु बंधन में जीव को बांध्या, काल का खेल ये सारा है–2.
कहें वे नाम किस किस को जगाऊं, पंच तत्व सूं मन ने घेरा है–2
ऐसा ईक वी जीव ना पाया, जिसे केवल सच को पाना है–2 ... तेरे तेरे तेरे –

6 सतगुरू को दण्डवत करके, कौटि कौटि करो प्रणामा–2
कीट ना जाने बृहंगा को, सतगुरू करे आप समाना–2
जोत में जोत मिल जावे, सच्ची प्रीत में वासा है–2... तेरे तेरे तेरे –

7 तेरे चरणों की धूली पाकर, हम सब तेरे होये हैं–2
आशा तृष्णा को झाडू देकर, हम सब तेरे होये हैं–2
तेरे नूरी रूप को पाकर, हम सब हंसा होये हैं–2.. तेरे तेरे तेरे –

8 तेरे प्यार को पाकर साहिबा, हम सब तेरे होये हैं–2
विरह की आग़ में मान जलाकर, हम सब तेरे होये हैं–2
बिन तेरे कोई ना अपना, इस भेद को जाना है–2 ... तेरे तेरे तेरे –

9 मोह का मान सब्द सूं जला कर, हम सब प्रेमी होये हैं–2
सतगुरू रूप में तुझको पाकर, सतगुरू प्रेमी होये हैं–2
अमृत सब्द सूं मान जलाकर, हम सब हंसा होये हैं–2 ... तेरे तेरे तेरे –

10 सतगुरू चरणों में सर रख कर, हम सब तेरे होये हैं–2
निःअक्षर दात सूं भक्ति उपझी, प्रेम की जोत जगाई है–2
प्रेम उपझे सुरति जागी, सत्त में सत्त समाया है–2 ... तेरे तेरे तेरे –

11 कोई कोई प्यारा भेद को जाने, अमर लोक ठिकाना है–2
सत्त सब्द का सिमरन करके, सुरति सूं निज को जाना है–2
मोह का मान जलाकर हम सब, साहिबन तेरे होये हैं–2 ... तेरे तेरे तेरे –

12 तेरे चरणों की धूली पाकर, हम सब तेरे होये हैं–2
आशा तृष्णा को झाडू देकर, हम सब तेरे होये हैं–2
तेरे नूरी रूप को पाकर, हम सब हंसा होये हैं–2 ... तेरे तेरे तेरे –

13 प्रेम प्रीति को शुद्ध बनाकर, हम सब सुरति सूं जागे हैं–2
मान माया का भेद मिटा कर, सतगुरू जी तेरे होये हैं–2
विरह विराग़ की जोत जलाकर, हम सब तेरे होये हैं–2 ... तेरे तेरे तेरे –

14 बिन ईक कुछ और जग नांहि, सच्चे प्रेम को जाना है–2
बिन तेरे जीव जागे ना, सच्चे भेद को जाना है–2
हर ईक में साहिबन को जानो, सत्त की जोत जलानी है–2 ... तेरे तेरे तेरे –

तेरे तेरे तेरे तेरे, साहिबा हम सब तेरे होये हैं–2
अमर जोत का दिया जला कर–2, हम सब तेरे होये हैं–2
कोई नहीं आत्म बांधने वाला, आत्म निज को बांधा है–2 ... तेरे तेरे तेरे –

–0–

Sant Satguru 'Vai Naam' Paramhans Sahib Ji says :-

"All this, which has been written is written only by all the "Hansas", for all the "Hansas" and all its credit that too goes to all the "Hansas" of the universe.

Satguru 'Vai Naam' Paramhans Ji has remained successful in explaining the 'Truth, Difference and Secret of 'Sahib Satpurush Ji' and 'Bhagwan Nirankar' to the masses since March 18, 2012 onwards. Since then regularly and constantly "Vai Naam Surti Dhara" is flowing like a river on this planet (Trilok) including the Satlok/Amarlok Nijghar Nijdhaam, abode of all the 'Hansas' as well and which will also continue to flow and flow till many many Qayamats to come...and for the welfare of all the Jag Jeevas and Hansas as well.

AARTI SAHIB JI - 9
(PART-I)

Tere tere tere tere Sahiba, tere hoye hain -2
Tere tere tere tere, ham sab tere hoye hain -2
Amar jot ka diya jala kar, ham sab tere hoye hain -2
Koi nahin aatam baandhne wala, aatam nij ko baandha hai -
Tere tere tere tere--

1 Amar lok suin Hansa sab aaye, Amar lok ke wasi hain -2
Kabhi na marne wale Hansa, Sattpurush ke pyare hain -2
Tere tere tere tere---

2 Teen lok mein khelne aaye, jahan Mann hi raja hai -2
Saar Sabd bin baat bane na, jo surti ka raja hai -2
Tere tere tere tere---

3 Ham sab Satyapurush ke ansh pyare, unki aankhon ke taare hain -2
Ve pal pal pukaar hain dete, Maya kaaran sun nahin paate hain -2
Tere tere tere tere---

4 Ham hi kachra nahin jalaate, jo sab maan ka kaaran hai -2
Kal aur kal mein jana kachra, iss pal se paar ho jana hai-2
Tere tere tere tere---

5 Moh maya ka bandhan dhokha, mann ne jaal rachaya hai -2
Asha trishna ka bandhan dhoka, mann ne khel rachaya hai -2
Tere tere tere tere---

6 Jag karmon ka jaano bandhan, kaal ne khel rachaya hai -2
Surti Sabd se torho bandhan, Satguru ne bhed bataya hai -2
Tere tere tere tere---

7 Taj de kal aur kal mein jana, surti sabd ka khel nyara hai -2
Tuin tou surti jot amar hai, surti khel pyara hai -2
Tere tere tere tere---

8 Kyon aaya kahan se aaya, sab Satguru se jana hai -2
Ham sab Satpurush ke pyare hansa, Begampur thikana hai -2
Tere tere tere tere---

9 Satt Sabad ko paakar pyare, hansa roop ko pana hai -2
Surti Sabad swansa ke jorh se, surat kamal mein jana hai -2
Tere tere tere tere---

10 Solahn surya ki jot ko paakar, vihangam chaal ko pana hai -2
Satguru ka sang paakar pyare, nijghar ko jana hai -2
Tere tere tere tere---

11 Sab Paramhanson se mail hai hota, amrit pyala pee jaate hain -2
Aane mein kyon der kari pyare, yeh sab kuch poocha jata hai -2
Tere tere tere tere---

12 Satguru ko dandwat karke, koti koti karo pranama hai -2
Jot mein jot mil jave, sachhi preet mein vasa hai -2
Tere tere tere tere---

Tere tere tere tere Sahiba, tere hoye hain -2
Tere tere tere tere, ham sab tere hoye hain -2
Amar jot ka diya jala kar, ham sab tere hoye hain -2
Koi nahin aatam baandhne wala, aatam nij ko baandha hai -
Tere tere tere tere---

AARTI SAHIB JI - 10
(PART- II)

Tere tere tere tere Sahiba, tere hoye hain -2
Tere tere tere tere, ham sab tere hoye hain -2
Amar jot ka diya jala kar, ham sab tere hoye hain -2
Koi nahin aatam baandhne wala, aatam nij ko baandha hai -
Tere tere tere tere---

1 Tu tou aatam jot amar hai, Satt prem ajar amar hai -2
Virah virag ki dowr na thaami, pag pag karmon ka bandhan hai -2
Tere tere tere tere---

2 Choota sang Sahiban ka pyara, Nij ki bhool na jaani re -2
'Vai Naam' Nij ki pehchaan karaie, Aatam prem pyas jagaie -2
Tere tere tere tere---

3 Amrit Sabad ki daat ko paakar, Satt ki jot jagaie hai -2
Satt hi prem bhakti ka ang hai, prem jaage tou Satguru sang hai -2
Tere tere tere tere---

4 Kyun aaya kahan se aaya, sab Satguru suin jaana hai -2
Ham sab nij ghar ke hansa pyare, Begampur thikaana hai -2
Tere tere tere tere---

5 Pooran moksh ka amrit paakar, nij ko pehchana hai -2
Surti mein Satt Sabad ko dhya kar, Mann ka maan mitana hai -2
Tere tere tere tere---

6 Chaand chakowr si preet hamari, pal ko bhi na toote taadi -2
Khali kar diya aatam mann suin, hansa roop ko dhara hai -2
Tere tere tere tere---

7 Tu hi andhar tu hi bahira, kiya toone thikana hai -2
Sache Satguru suin naata jouda, charnon mein amrit saagar hai -2
Tere tere tere tere---

8 Prem gali ati saankri pyaro, mann maan ka prvesh tahan nahi -2
Asha trishna ka sang choota, laagi Satguru suin taadi hai -2
Tere tere tere tere---

9 Iss pal mein rehna seekha, surti suin amrit paya hai -2
Niakshar sabd mein sahiban vasa, dooja mann aan samaya hai -2
Tere tere tere tere---

10 Surti mein har pal ja kar, satt ka deep jalaya hai -2
Aisa ik vi jeev na paya, jise keval sach ko pana hai -2
Tere tere tere tere---

11 Bahu bandhan mein jeev ko bandya, kaal ka khel ye sara hai -2
Kahein Vai Naam kis kis ko jagaun, panch tatav suin mann ne ghera hai-2
Tere tere tere tere---

12 Tere charno ki dhooli pakar, ham sab tere hoye hain -2
Asha Trishna ko jharu dekar, ham sab tere hoye hain -2
Tere tere tere tere---

13 Teri jot mein jot mila kar, tere prem mein khoye hain -2
Tere pyar ko pakar sahiba, ham sab tere hoye hain -2
Tere tere tere tere---

14 Virha ki aag mein maan jalakar, ham sab tere hoye hain -2
Bin tere koi na apna, iss bhed ko jana hai -2
Tere tere tere tere---

15 Moh ka eku sabd suin jalakar, ham sab premi hoye hain -2
Satguru roop mein tujhko pakar, satguru premi hoye hain -2
Tere tere tere tere---

16 Amrit sabd suin maan jalakar, ham sab hansa hoye hain -2
Satguru charno mein sar rakh kar, ham sab tere hoye hain -2
Tere tere tere tere---

17 Niakshar daat suin bhakti upjhi, prem ki jot jagai hai -2
Prem upjhe surti jagi, satt mein satt samaya hai -2
Tere tere tere tere---

18 Prem preeti ko shudh bana kar, ham sab surti suin jage hain -2
Mann maya ka bhed mita kar, satguru ji tere hoye hain -2
Tere tere tere tere---

19 Virah virag ki jot jala kar, ham sab tere hoye hain -2
Har ik mein sahiban ko jano- sach ki jot jalani hai -2
Tere tere tere tere---

20 Bin ik kuch aur nahi, sache prem ko jana hai -2
Bin tere jeev jage na, sache bhed ko jana hai -2
Tere tere tere tere---

Tere tere tere tere Sahiba, tere hoye hain -2
Tere tere tere tere, ham sab tere hoye hain -2
Amar jot ka diya jala kar, ham sab tere hoye hain -2
Koi nahin aatam baandhne wala, aatam nij ko baandha hai -
Tere tere tere tere---

अमर लौक भेद (अठतालिसा) – 11

1 बिन पग चले – सुने बिन काना
2 कर विधि कर्म – करे अति नाना
3 बिन मुख बोले – बोल अति नाना
4 खेल इस मन का – पूर्ण ना जाना
5 मत अभी जानो – आत्म हुई हंसा
6 मन संग तार – छूटी मत जानो
7 सुरति भेद – जब तक ना पाया
8 मन की तार – छूटी मत जानो
9 सार नाम बिन – आत्म नहीं हंसा
10 विहंगम चाल सूं – हंसा है चलता
11 मीन पपील चाल सूं – अति अनोखी
12 पल में हंसा – महां सुन्न सूं पारा
13 सतगुरू कृपा सूं – चाल को पाओ
14 मीन पपील चाल – तुम भूल जाओ
15 सार नाम – आत्म करे हंसा
16 विहंगम चाल सूं – हंसा है चलता
17 मिले चाल होए – सुन्न से पारा
18 तभी कहलाए – सतगुरू का प्यारा
19 मन जब छूटे – सुरति जग जाए
20 हर पल सब्द – प्राण सुरति में समाए
21 अब ही शिष्य – निज को जाने
22 तभी वो निज को – जागा माने
23 काल जाल का – बंधन छूटा
24 जन्म मरण का – कलषा फूटा
25 सतगुरू कृपा सूं – निजघर को जांए

26 परमहंसा संग – रास रचाएं ।
27 अमरधाम ही है – सत्त का देसा ।
28 गीता भी है – देती संदेसा ।
29 पंद्रवें अध्याय का – छटा श्लौका ।
30 कृष्ण भी निजधाम का – देते संदेसा ।
31 अमरलौक ही – सतपुरूष स्वरूपा ।
32 पहुंचो निजघर – जानो परम स्वरूपा ।
33 ईक ईक अंग की – महिमां जानो ।
34 अपना स्वरूप भी – उनका ही जानो ।
35 पूर्ण सत्तगुरू – रूप को धारो ।
36 उसी रूप को – देख देख न्यारो ।
37 परमहंसा का – रूप मिले जब ।
38 तभी वह – निज रूप को धारे ।
39 वहीं रहो या – इस जग में आओ ।
40 इस का वह कुछ – भेद ना देते ।
41 इस जग आओ – परमहंस कहलाओ ।
42 सार सब्द की – दात को पाओ ।
43 निज को तुम – दासा कर जानो ।
44 जग में बुरा – किसी को मत मानो ।
45 'वे नाम' का केवल – संदेसा है इतना ।
46 जीवित मरना – भव जल तरना ।
47 इस पल में तुम – इस पल में रहना ।
48 सब हैं अपने – कोई ना बैग़ाना ।।

......''वे नाम का कहा बस इतना मानो
सब को जग में सतपुरूष ही जानो''

–0–

सहज भक्ति त्रिस्वा – 12
(भाग–1)

आदत बुरी सुधार लो, तो हो गया भजन – २

1 मन की तरंग जान लो, तो हो गया भजन – २
2 मन माया संग छोड़ दो, तो हो गया भजन – २
3 आये कहां से और जाना कहां जान लो, तो हो गया भजन – २
4 निज का भेद जान लो, तो हो गया भजन – २
5 निज घर का भेद जान लो, तो हो गया भजन – २
6 कल और कल में जाना छुट गया, तो हो गया भजन – २
7 कल और आज मिट गया, तो हो गया भजन – २
8 इस पल में रहना आ गया, तो हो गया भजन – २
9 सार सब्द साहिबन वास जान लो, तो हो गया भजन – २
10 सतगुरू सूं सब्द को पा लिया, तो हो गया भजन – २
11 सुरति निरति का भेद पा लिया, तो हो गया भजन – २
12 मेरे तेरे का भेद मिट गया, तो हो गया भजन – २
13 विचारों का जाल छोड़ दो, तो हो गया भजन – २
14 विचारों के प्रति जाग गये, तो हो गया भजन – २
15 विचारों के तल पे आ गये, तो हो गया भजन – २
16 रिश्ते नातों का भेद मिट गया, तो हो गया भजन – २
17 नहर बनने का भेद जान लो, तो हो गया भजन – २
18 नहर छोड़ दरिया बनने का भेद जान लो, तो हो गया भजन – २
19 दुनियां बनना और मिटना जान लो, तो हो गया भजन – २
20 साहिब प्यारा एक हमारा जान लो, तो हो गया भजन – २

आदत बुरी सुधार लो, तो हो गया भजन – २

सहज भक्ति त्रिस्वा (भाग–2)

आदत बुरी सुधार लो, तो हो गया भजन – २

21 जीने मरने का भेद पा लिया, तो हो गया भजन – २
22 जग में आने का भेद जान लो, तो हो गया भजन – २
23 सत्त की ओर चल पड़े, तो हो गया भजन – २
24 सच्चे पिता को जान लिया, तो हो गया भजन – २
25 आत्म बंधन का भेद जान लो, तो हो गया भजन – २
26 तृष्णाओं के प्रति जाग गया, तो हो गया भजन – २
27 कर्मों के प्रति जाग गया, तो हो गया भजन – २
28 उत्तेजना के प्रति जाग गया, तो हो गया भजन – २
29 भावों को शुद्ध कर लिया, तो हो गया भजन – २
30 कष्ट सुख का प्रतीक मान लो, तो हो गया भजन – २
31 सुख दुख में सम जब हो गये, तो हो गया भजन – २
32 सब को साहिबन अंश जान लो, तो हो गया भजन – २
33 अंतर–जगत के प्रति जाग गया, तो हो गया भजन – २
34 विचारों से खाली हो गया, तो हो गया भजन – २
35 समग्र जाग्रता आ गई, तो हो गया भजन – २
36 सतगुरू के प्रति श्रद्धा जग गई, तो हो गया भजन – २
37 कर्म करते सहज रहो, तो हो गया भजन – २
38 कर्मण खेल जान लो, तो हो गया भजन – २
39 सुरति सिमरन बना रहे, तो हो गया भजन – २
40 अभी इस क्षण में जीना आ गया, तो हो गया भजन – २

आदत बुरी सुधार लो, तो हो गया भजन – २

सहज भक्ति त्रिस्वा (भाग–3)

आदत बुरी सुधार लो, तो हो गया भजन – २

41 सब ओर से तुझे देख रहा जान लो, तो हो गया भजन – २
42 कल और कल में जाना छोड़ दो, तो हो गया भजन – २
43 चारों ओर साहिब विस्तार जान लो, तो हो गया भजन – २
44 चारों ओर आत्म विस्तार जान लो, तो हो गया भजन – २
45 अशांति के प्रति जग गया, तो हो गया भजन – २
46 शांत सहज सम हो गया, तो हो गया भजन – २
47 विषयों में रहना छोड़ दो, तो हो गया भजन – २
48 साहिब के प्रति जाग्रता आ गई, तो हो गया भजन – २
49 निज के प्रति जाग्रता आ गई, तो हो गया भजन – २
50 काम मन का उद्ग़म है जान लो, तो हो गया भजन – २
51 'मै और मेरी' मिट गई, तो हो गया भजन – २
52 रिश्ते नातों को भेद मिट गया, तो हो गया भजन – २
53 सहज अवस्था को पा लिया, तो हो गया भजन – २
54 सुरति से ध्यान में जाना आ गया, तो हो गया भजन – २
55 निज स्वभाव में जीना आ गया, तो हो गया भजन – २
56 'मै' और 'मेरी' का भ्रम मिट गया, तो हो गया भजन – २
57 मोह माया को जान लो, तो हो गया भजन – २
58 लोभ लार को छोड़ दो, तो हो गया भजन – २
59 भेद भाव मिट गया, तो हो गया भजन – २
60 दुख सुख का भेद पा लिया, तो हो गया भजन – २

आदत बुरी सुधार लो, तो हो गया भजन – २

सहज भक्ति त्रिस्वा (भाग–4)

आदत बुरी सुधार लो, तो हो गया भजन – २

61 झुकना जब आ गया, तो हो गया भजन – २
62 अंदर से मान मिट गया, तो हो गया भजन – २
63 सभी को ईक जान लो, तो हो गया भजन – २
64 दुख सुख ईक सम जान लो, तो हो गया भजन – २
65 सपने लेना तज दिया, तो हो गया भजन – २
66 जग को सपना जान लो, तो हो गया भजन – २
67 काम क्रोध मद् लोभ का ज्ञान हो गया, तो हो गया भजन – २
68 ईष्या द्वैष जब मिट गया, तो हो गया भजन – २
69 सत्त झूठ में भेद मिट गया, तो हो गया भजन – २
70 आत्म की जोत जग गई, तो हो गया भजन – २
71 तज कुसंग सत्संग पा लिया, तो हो गया भजन – २
72 सार नाम है राम रत्न जान लो, तो हो गया भजन – २
73 आषा तृष्णा से मुक्त हो गये, तो हो गया भजन – २
74 जीने का राज़ जान लो, तो हो गया भजन – २
75 सृष्टि् का राज़ जान लो, तो हो गया भजन – 2
76 तेरा साहिब स्वांस में जान लो, तो हो गया भजन – २
77 तेरा साहिब हर घट अंदर जान लो, तो हो गया भजन – २
78 स्वांसा का उपर चलना पा लिया, तो हो गया भजन – २
79 बाहर से भीतर चल पड़ो, तो हो गया भजन – २
80 मौत का डर खो गया, तो हो गया भजन – २

आदत बुरी सुधार लो, तो हो गया भजन – २

सहज भक्ति त्रिस्वा (भाग–5)

आदत बुरी सुधार लो, तो हो गया भजन – २

81 अंदर से खाली हो गये, तो हो गया भजन – २
82 अंदर जाने का भेद पा लिया, तो हो गया भजन – २
83 अंदर बाहर ईक हो गये, तो हो गया भजन – २
84 सुन्न को भीतर धार लो, तो हो गया भजन – २
85 कंचन माटि ईक समान दिखे, तो हो गया भजन – २
86 सुरति में सब्द रम गया, तो हो गया भजन – २
87 हर पल सुरति में रहो, तो हो गया भजन – २
88 बिन सतगुरू कोई पार नांहि जान लो, तो हो गया भजन – २
89 सतपुरूष का पता मिल गया, तो हो गया भजन – २
90 सतगुरू को सब सौंप दो, तो हो गया भजन – २
91 सतगुरू पे भरोसा आ गया, तो हो गया भजन – २
92 अंदर में साहिब बसा लिये, तो हो गया भजन – २
93 सतपुरूष का भेद पा लिया, तो हो गया भजन – २
94 सुरति में सत्त को धार लो, तो हो गया भजन – २
95 गुरू सूं पारस सुरति मिल गई, तो हो गया भजन – २
96 सुरति ने मन मिटा दिया, तो हो गया भजन – २
97 अश्विन धारा बहना ना रूके, तो हो गया भजन – २
98 तुरियातीत अवस्था पा गया, तो हो गया भजन – २
99 तुरियातीत में रमना आ गया, तो हो गया भजन – २
100 जीते जी मरना आ गया, तो हो गया भजन – २

आदत बुरी सुधार लो, तो हो गया भजन – २

सहज भक्ति त्रिस्वा (भाग–6)

आदत बुरी सुधार लो, तो हो गया भजन – २

101 उल्टा जाप करना आ गया, तो हो गया भजन – २
102 सर्गुण निर्गुण साहिब भेद जान लिया, तो हो गया भजन – २
103 अष्टम चक्र में गुरू पा लिया, तो हो गया भजन – २
104 सतगुरू को जग में पा लिया, तो हो गया भजन – २
105 सतगुरू छवि जो नैनन बसे, तो हो गया भजन – २
106 सतगुरू पे सब लुटा दिया, तो हो गया भजन – २
107 प्रेम वैराग अंदर जग गया, तो हो गया भजन – २
108 कामना रोग है जान लो, तो हो गया भजन – २
109 मीरा ने सब लुटा दिया, तो हो गया भजन – २
110 जग का भाव तज दिया, तो हो गया भजन – २
111 अंदर से तार जुड़ गई, तो हो गया भजन – २
112 जोत से जोत जग गई, तो हो गया भजन – २
113 मुझ में 'मै' खो गई, तो हो गया भजन – २
114 वैराग़ की धारा जग गई, तो हो गया भजन – २
115 प्रेम प्रीत में जब खो गई, तो हो गया भजन – २
116 बच्चे समान पुकार करना आ गया, तो हो गया भजन – २
117 पुकार में विरह आ गई, तो हो गया भजन – २
118 कुछ भी बुरा ना दिखे, तो हो गया भजन – २
119 सतगुरू सब्द बाण खा लिया, तो हो गया भजन – २
120 जा सहजै में साहिबन मिले, तो हो गया भजन – २

आदत बुरी सुधार लो, तो हो गया भजन – २

सहज भक्ति त्रिस्वा (भाग–7)

आदत बुरी सुधार लो, तो हो गया भजन – २

121 जब साधक सहज कहावे, तो हो गया भजन – २
122 भीतर से सहजता प्रकटे, तो हो गया भजन – २
123 मस्ती का पता मिल गया, तो हो गया भजन – २
124 मरने का डर मिट गया, तो हो गया भजन – २
125 भक़्ति मे निडर हो गया, तो हो गया भजन – 2
126 आज का अभी कर लो, तो हो गया भजन – २
127 विरह पुकार करनी जान लो, तो हो गया भजन – २
128 तूं बस तूं अंदर बस गई, तो हो गया भजन – २
129 बच्चों के आगे झुकना आ गया, तो हो गया भजन – २
130 सतगुरू महिमां गाना आ गया, तो हो गया भजन – २
131 निज तन को भूल जाओ, तो हो गया भजन – २
132 जग में ईक सम रहना आ गया, तो हो गया भजन – २
133 मीन पपील विहंगम का भेद जान लो, तो हो गया भजन – २
134 सब्द और शब्द का भेद जान लो, तो हो गया भजन – २
135 जग कर्मों का खेल जान लो, तो हो गया भजन – २
136 कांटों में रहना आ गया, तो हो गया भजन – २
137 बिन स्वांसा जीना आ गया, तो हो गया भजन – २
138 रातों में हसना आ गया, तो हो गया भजन – २
139 प्रेम विरह में रोना आ गया, तो हो गया भजन – २
140 स्वांसा में साहिब नाम रम गया, तो हो गया भजन – २

आदत बुरी सुधार लो, तो हो गया भजन – २

सहज भक्ति त्रिस्वा (भाग–8)

आदत बुरी सुधार लो, तो हो गया भजन – २

141 रैन दिन स्वांसा आरती को जान लो, तो हो गया भजन – २
142 सब्द सुरति स्वांस समाऐ, तो हो गया भजन – २
143 बस्ती और मरघट का भेद पा लो, तो हो गया भजन – २
144 सतगुरू में श्रद्धा जग गई, तो हो गया भजन – २
145 पूर्ण समर्पण जब हो गया, तो हो गया भजन – २
146 ज्ञान ध्यान प्रेम जब ईक हों, तो हो गया भजन – २
147 सहजता का बीज सतपुरूष जान लो, तो हो गया भजन – २
148 सहज सरतला मूलतः साहिब जान लो, तो हो गया भजन – २
149 सुमिरन योग लय योग जान लो, तो हो गया भजन – २
150 दौ भाग सहज योग जान लो, तो हो गया भजन – 2
151 हर पल को आखिरी जान लो, तो हो गया भजन – २
152 अनहद की मीठी धुण पार कर लो, तो हो गया भजन – २
153 अनहद ढोल जान लो, तो हो गया भजन – २
154 आत्म पर मन का ताला खुले, तो हो गया भजन – २
155 औंकार ताला आत्म जान ले, तो हो गया भजन – २
156 औंकार ताले की चाभी सतगुरू सूं पा लो, तो हो गया भजन – २
157 सार सब्द से औंकार ताला खुले, तो हो गया भजन – २
158 औंकार नहीं सतपुरूष उद्‌गम तुम्हारा जान लो, तो हो गया भजन – २
159 विचारों में विचरणा छोड़ दो, तो हो गया भजन – २
160 सोच विचार संशय मूल जान लो, तो हो गया भजन – २

आदत बुरी सुधार लो, तो हो गया भजन – २

सहज भक्ति त्रिस्वा (भाग–9)

आदत बुरी सुधार लो, तो हो गया भजन – २

161 निज बिन कुछ ना दिखाई दे, तो भी ना हो सके भजन – २
162 कामना अधूरी रहे, तो भी ना हो सके भजन – २
163 कामना पूरी हो गई, तो भी ना हो सके भजन – २
164 लोभ लालसा ना मिटी, तो भी ना हो सके भजन – २
165 संवेदना जब तक ना जगे, तो भी ना हो सके भजन – २
166 अर्जुन की युद्ध में जीत हुई, तो भी ना हो सके भजन – २
167 अर्जुन की आस पूरी ना हुई, तो भी ना हो सके भजन – २
168 सिकंदर की आस पूरी हो गई, तो भी ना हो सके भजन – २
169 पोरस की आस मर गई, तो भी ना हो सके भजन – २
170 सिकंदर की हो गई जीत, तो भी ना हो सके भजन – २
171 पोरस की हो गई हार, तो भी ना हो सके भजन – २
172 ईच्छाऐं जो पूरी ना हुई, तो भी ना हो सके भजन – २
173 ईच्छाओं की बाधा पर क्रौध आया, तो भी ना हो सके भजन – 2
174 हार से मन बुझ गया, तो भी ना हो सके भजन – २
175 हार से द्वैष बढ़ गया, तो भी ना हो सके भजन – २
176 जीत से मान जग गया, तो भी ना हो सके भजन – २
177 मान से मति मर गई, तो भी ना हो सके भजन – २
178 हार जीत जो ना मिटी, तो भी ना हो सके भजन – २
179 कशमकश ना जो मिटी, तो भी ना हो सके भजन – २
180 मन माया जो ना मिटी, तो भी ना हो सके भजन – २
181 स्वार्थ सिद्धि ना मिटी, तो भी ना हो सके भजन – २

आदत बुरी सुधार लो, तो हो गया भजन – २

सहज भक्ति त्रिस्वा (भाग–10)

आदत बुरी सुधार लो, तो हो गया भजन – २

182 कामनाओं का रस जान लो, तो हो गया भजन – २
183 जीत हार का विचार ना रहा, तो हो गया भजन – २
184 तन तज निज को जान लो, तो हो गया भजन – २
185 जब सब प्रेमी दिखें, तो हो गया भजन – २
186 स्वभाव में जीना आ गया, तो हो गया भजन – २
187 काम क्रौध से मुक्त हो गये, तो हो गया भजन – २
188 तेरी मेरी खो गई, तो हो गया भजन – २
189 मुख और मन तन अंग जान लो, तो हो गया भजन – २
190 देव भक्ति सूं स्वर्ग मिले ये जान लो, तो हो गया भजन – २
191 निरंकार भक्ति सूं सुन्न लोक मिले ये जान लो, तो हो गया भजन – २
192 जग भक्ति सूं मन तरंग ना मिटे ये जान लो, तो हो गया भजन – २
193 स्वर्ग सुन्न अल्प मुक्ति जान लो, तो हो गया भजन – २
194 मुक्ति सूं आवागमन ना मिटे ये जान लो, तो हो गया भजन – २
195 मुख मन भक्ति सूं मोक्ष ना मिले ये जान लो, तो हो गया भजन – २
196 पूर्ण सतगुरू शरणी ही मोक्ष मिले ये जान लो, तो हो गया भजन – २
197 तन दुखों का मूल जान लो, तो हो गया भजन – २
198 तूं तन मन नांहि ये जान लो, तो हो गया भजन – २
199 हर पल में उसको देख लो, तो हो गया भजन – २
200 प्रेम पुकार करना सीख लो, तो हो गया भजन – २
201 अपनी शक्ति का प्रयोग आ गया, तो हो गया भजन – २

आदत बुरी सुधार लो, तो हो गया भजन – २

सहज भक्ति त्रिस्वा (भाग–11)

आदत बुरी सुधार लो, तो हो गया भजन – २

202 बुद्धि का प्रयोग आ गया, तो हो गया भजन – २
203 हर हाल में जीना आ गया, तो हो गया भजन – २
204 प्राणों का संग छूट गया, तो हो गया भजन – २
205 कुछ भी बुरा जग ना दिखे, तो हो गया भजन – २
206 ईक बिन कुछ ना दिखे, तो हो गया भजन – २
207 साहिब ईक प्यारा जान लो, तो हो गया भजन – २
208 कुछ करना शेष ना रहा, तो हो गया भजन – २
209 प्रेम लगन लग गई, तो हो गया भजन – २
210 मूल नाम का भेद पा लिया, तो हो गया भजन – २
211 तज कुसंग सतनाम भजा, तो हो गया भजन – २
212 ईन्द्रियों का बंधन जान लो, तो हो गया भजन – २
213 कामनाओं का रस जान लो, तो हो गया भजन – २
214 मृत्यु का भय मिट गया, तो हो गया भजन – २
215 निष्काम समाधि लग गई, तो हो गया भजन – २
216 तन माटि समान जान लो, तो हो गया भजन – २
217 ईस तन का ख़ाक होना जान लो, तो हो गया भजन – २
218 दोनों का संग खो गया, तो हो गया भजन – २
219 सतगुरू चरणों में खोना आ गया, तो हो गया भजन – २
220 साहिबन सब मूल जान लो, तो हो गया भजन – २
221 कीचड़ में खिलना आ गयो, तो हो गया भजन – २

आदत बुरी सुधार लो, तो हो गया भजन – २

सहज भक्ति त्रिस्वा (भाग–12)

आदत बुरी सुधार लो, तो हो गया भजन – २

222 सब ओर प्रेम छा गयो, तो हो गया भजन – २
223 अंदर प्रेम जोत जग गई, तो हो गया भजन – २
224 श्रद्धा भक्ति से प्रेम प्रकटे, तो हो गया भजन – २
225 हरि से आगे साहिबन नाम पा लो, तो हो गया भजन – २
226 आत्म कर्मण रहित जान लो, तो हो गया भजन – २
227 आत्म को मन से छुड़ा लिया, तो हो गया भजन – २
228 आत्म रूप जब हो गये, तो हो गया भजन – २
229 पूर्ण आत्मिक होना आ गया, तो हो गया भजन – २
230 सतगुरू शरणी मूल सब्द मिले जान लो, तो हो गया भजन – २
231 सुरत सब्द में जब समा गये, तो हो गया भजन – २
232 'मै' का मान तज दिया, तो हो गया भजन – २
233 सुरत सब्द में सतगुरू वास जान लो, तो हो गया भजन – २
234 सतगुरू में साहिबन वास जान लो, तो हो गया भजन – २
235 सुरत कमल में जाना आ गया, तो हो गया भजन – २
236 सब्द सुरति खुमारी जान लो, तो हो गया भजन – २
237 ईंगला पिंगला का राज़ पा लिया, तो हो गया भजन – २
238 सुश्मिन खोलने का राज़ जान लो, तो हो गया भजन – २
239 सुश्मिन सम करना आ गया, तो हो गया भजन – २
240 स्वांसा को सम कर दिया, तो हो गया भजन – २
241 स्वांसा में सब्द बस गया, तो हो गया भजन – २

आदत बुरी सुधार लो, तो हो गया भजन – २

सहज भक्ति त्रिस्वा (भाग–13)

आदत बुरी सुधार लो, तो हो गया भजन – २

242 सुरति निरति स्वांसा में लीन जान लो, तो हो गया भजन – २
243 सुरति निरति मिल आत्म किया, तो हो गया भजन – २
244 सुरत कमल में गुरू पा लिया, तो हो गया भजन – २
245 सुरत कमल में सतगुरू संग पा लिया, तो हो गया भजन – २
246 सुरति से गुरू के हो गये, तो हो गया भजन – २
247 पारस सुरति का भेद पा लिया, तो हो गया भजन – २
248 स्वांसा में सिमरन करना आ गया, तो हो गया भजन – २
249 निरति को स्वांसा में डालना आ गया, तो हो गया भजन – २
250 निरति ही चेतन प्राण है ये जान लो, तो हो गया भजन – 2
251 निरति ही जीवन मूल है ये जान लो, तो हो गया भजन – २
252 योगी यति भी विदेह दात पा ले, तो हो गया भजन – २
253 स्वांसा संग सब्द सिमरन करना आ गया, तो हो गया भजन – २
254 सब्द ही निरति सुरति मेल करे ये जान लो, तो हो गया भजन – २
255 निरति सुरति के मेल से आत्म बने ये जान लो, तो हो गया भजन – २
256 मूल सब्द ही आत्मिक करे ये जान लो, तो हो गया भजन – २
257 बिन आत्मिक हुऐ कोई ना तरे ये जाल लो, तो हो गया भजन – २
258 निरति ही सत्त सुरति चेतन ये जान लो, तो हो गया भजन – २
259 सातों सुरति मिल मूल सुरति बने ये जान लो, तो हो गया भजन – २
260 मूल सुरति ही भव पार करे ये जान लो, तो हो गया भजन – २
261 मूल सुरति ही सुरत कमल ले चले ये जान लो, तो हो गया भजन–२

आदत बुरी सुधार लो, तो हो गया भजन – २

सहज भक्ति त्रिस्वा (भाग–14)

आदत बुरी सुधार लो, तो हो गया भजन – २

262 मूल सुरति ही सतगुरू दरस करे ये जान लो, तो हो गया भजन – २
263 मूल सुरति ही आत्म हंसा करे ये जान लो, तो हो गया भजन – २
264 मूल सुरति सतगुरू संग सतलोक जाये ये जान लो, तो हो गया भजन–२
265 सतगुरू कृपा सूं मूल सुरति बने ये जान लो, तो हो गया भजन – २
266 बिन सतगुरू मेहर कोई ना तरे ये जान लो, तो हो गया भजन – २
267 सतगुरू कृपा से ही साधक तरे ये जान लो, तो हो गया भजन – २
268 सतगुरू ही तारणहार हैं ये जान लो, तो हो गया भजन – २
269 सतगुरू ही मन माया से मुक्त करें ये जान लो, तो हो गया भजन – २
270 बिन सतगुरू माया तजि ना जाये ये जान लो, तो हो गया भजन – २
271 सतगुरू दरस ही सहज करे ये जान लो, तो हो गया भजन – २
272 बिन सतगुरू जीव कबहु ना तरे ये जान लो, तो हो गया भजन – २
273 सतगुरू भक्ति सहज मार्ग है ये जान लो, तो हो गया भजन – २
274 जग तज सतगुरू सुरति चित्त लाई, तो हो गया भजन – २
275 सतगुरू सुरति मोक्ष पथ ले जाई, तो हो गया भजन – २
276 सतगुरू भक्ति सूं आत्म हंसा बने ये जान लो, तो हो गया भजन – २
277 सतगुरू संग साधक निजघर अमरपुर जाई, तो हो गया भजन – २
278 सुरति ही स्मृति जान लो, तो हो गया भजन – २
279 निज को भूल जाओ, तो हो गया भजन – २
280 मृत्यु से मुक्त होने का भेद जान लो, तो हो गया भजन – २
281 उड़ती हुई माटि को जान लो, तो हो गया भजन – २

आदत बुरी सुधार लो, तो हो गया भजन – २

सहज भक्ति त्रिस्वा (भाग–15)

आदत बुरी सुधार लो, तो हो गया भजन – २

282 तन का ख़ाक में मिलना जान लो, तो हो गया भजन – २
283 अंदर में पौचा लगाना आ गया, तो हो गया भजन – २
284 अंदर निर्मल हो गया, तो हो गया भजन – २
285 सतगुरू सतपुरूष जान लो, तो हो गया भजन – २
286 जो साहिब हैं वोहि 'मैं' हूं जान लो, तो हो गया भजन – २
287 बूंद में सिंधु समा गया, तो हो गया भजन – २
288 सतगुरू में ईक मिक हो गये, तो हो गया भजन – २
289 साहिबन नाम चौथा राम जान लो, तो हो गया भजन – २
290 सतगुरू दयाल तो साहिब दयाल जान लो, तो हो गया भजन – २
291 तीनों मिल त्रिधारा बने, तो हो गया भजन – २
292 झील समान शांत हो गये, तो हो गया भजन – २
293 रूप खो जाये अरूप प्रकटाऐ, तो हो गया भजन – २
294 सतगुरू जाये साहिबन प्रकटाऐ, तो हो गया भजन – २
295 सतगुरू का जाना और साहिबन आना हो, तो हो गया भजन – २
296 साहिबन रूप सभी को जान लो, तो हो गया भजन – २
297 निर्लम्भ राम को जान लो, तो हो गया भजन – २
298 छेः तन से पार होना आ गया, तो हो गया भजन – २
299 जब हंस रूप पा लिया, तो हो गया भजन – २
300 हर हंसा संग ७१ पीढ़ी तरे जान लो, तो हो गया भजन – २
301 सत में सत समा गया, तो हो गया भजन – २

आदत बुरी सुधार लो, तो हो गया भजन – २

–0–

''वे हूँ परमहँस जी'' की अमृतमयी वाणी द्वारा 'भव सूं पार' होने का भेद

निराकार व साहिब जी सत्ता भेद :–

कबीर साहिब आये निजधाम सूं, सब कुछ लिये संग साथ।
''वे नाम परमहँस'' ने सब समझा, तब पायो साहिबन साथ।
निरंकार में खोया रहा, दीन दुखी संग मजेदार।
चालीस साल लगे, सतनाम जहाज आने पर।
खुलते गये परदे, जब चली सत सुरति पतवार।
सब ओर सूं वर्षा हुई, देखी निराकार की महिमां अपार।
कंई ढंगों से दर्शन दिए, मीन पपील की पाई चाल।
स्वर्ग नर्क लोकों को देखा, देखी महिमां अपरम्पार।
कुछ जग का भाया नहीं, झूठा देखा ये सब पसार।
सहस्त्रहार लोक में तब गया, जब सार सब्द था संग साथ।
निराकार सूं बंधन गया, परम पुरूष ने पकड़ा हाथ।
निराकार खुशी सूं सौंप दिया, दास को साहिबन हाथ।
किसी सूं वैर तुम मत करो, हर बात में निकले बात।
निराकार ने तन मन दिया, डाला विच माया के जाल।
हंसा रूप निजधाम तेरा, आत्म रूप किया निरंकार।
झूठा ये संसार रचा, जिस सूं होना है तुझे पार।
बिन पूर्ण सतगुरू मूल नाम, भव सूं होत ना पार ।।

—0—

सहज मार्ग विधि विधान

विवाह संस्कार विधि (पद्यत्ति)

सहज सत्तमार्ग अनुसार विवाह रस्म संस्कार गृहस्थ आश्रम वृद्धि के लिये अनिवार्य है। इस सृष्टि् की नियमित वृद्धि व इसे सुचारू रूप से चलायेमान रखने के लिये गृहस्थ आश्रम का अहम योगदान है जिसके लिये विवाह रस्म का अनुष्ठान किया जाता है। सनातन विधि अनुसार विवाह रस्म में सात फेरे लेकर सात जन्मों तक साथ निभाने के वचन लिये जाते हैं परन्तु मानव जीवन तो मोक्ष के लिये मिला है ना की बारम्बार जमने मरने के लिये।

सहज सत्तमार्ग की विधि अनुसार इस विवाह पद्यत्ति में एक ही फेरा लिया जाता है क्योंकि पूर्ण सतगुरू को धारण कर के जीव इसी जीवन में मोक्ष प्राप्त करे, यही मनुष्य जीवन का मूल लक्ष्य होता है। इसी उपलक्ष्य में निम्नलिखित नियमों का पालन करें :–

तीन बार सब्द–सिमरण के उपरांत वर वधु को एक दूसरे को जय माला डालनी है तथा पुनः तीन बार सिमरण के उपरांत अंगूठी पहनानी है।

एक फेरा – इसी जन्म में पूर्णतः साथ निभाने का वचन (ये फेरा साहिब सतगुरू जी के अथ्वा उनके समाधि अवस्था वाले चित्र के इर्द–गिर्द ही लिया जाता है)।

एक फेरे उपरांत वर वधु की मांग में सिंदूर भरने तथा माथे पर बिन्दी लगाने की रस्म अदा करे।

तेरहं वचन

तेरहं वचन – जीवन भर निभाने का संकल्प, यह संकल्प सतगुरू जी द्वारा अथ्वा आगु साधक जी द्वारा दिलाये जायेंगे :–

1	सत्य बोलना	–	मनसा, वाचा, कर्मणा
2	विश्वास	–	हर परिस्थिति में एक दूसरे पर विश्वास करना
3	प्रेम भाव	–	हर समय प्रेम भाव से कहना सुनना
4	नेकी की कमाई	–	ईमानदारी से धन अर्जित करना
5	ईच्छा रहित	–	सुरति (भक्ति भाव) में रहना
6	चोरी से परहेज़	–	चोरी से कौसों दूर रहना
7	जुऐ से परहेज़	–	जुऐ अथ्वा शर्तों से दूर रहना
8	नशे से परहेज़	–	शराब व नशीले पदार्थों से सदा दूर रहना
9	मास से परहेज़	–	मांस मछली का सेवन कभी ना करना
10	मैत्री भाव	–	सभी को मैत्री भाव से देखना
11	एक नारी	–	एक नारी सदा ब्रह्मचारी रहना
12	साथ ना छोड़ना	–	सुख दुख अमीरी ग़रीबी में साथ निभाना
13	गुरू (सतगुरू)	–	हर सुख दुख में सतगुरू जी से परामर्श करना

नोट :– शादी के लिये सामिग्री :–

दौ जय–माला, बिन्दी, सिंदूर, मंगल सूत्र व दौ अंगूठियां किसी भी दातु की

–0–

देह संस्कार विधि

1. सर्वप्रथम मृत्तक शरीर त्यागने वाले के घर पर फोन से संपर्क करने के उपरान्त उनसे मिलकर जानकारी ग्रहण करें कि क्या वे सहज सत्तमार्ग विधि से देह संस्कार करना चाहते हैं अथ्वा संसारी रिती से।

2. जिन मृतकों के परिवार संसारिक विधि को अपनाते हैं, उनके यहां हमारी पद्यति के अनुसार कोई बाधा नहीं होगी और ना ही हमारी ओर से कोई सहयोग होगा।

3. अगर संसारिक विधि से देह संस्कार प्रक्रिया होती है तो साधकजन इसके लिये वे पूर्णतः स्वतंत्र हैं कि वे संस्कार में जायें या ना जायें, साथ ही जो साधक संस्कार स्थल पर या मृतक के घर में जाते हैं, वे वहां केवल अपनी उपस्थिति ही दर्ज करें। वे वहां किसी भी प्रकार के रिती रिवाज़ों व अनुष्ठान में हस्तक्षेप ना करें और ना ही किसी भी प्रकार से भागीदार बनें। केवल सहानुभुति ही पर्याप्त है।

4. सहज सतमार्ग के सतगुरू जी अनुसार हमारा संबंध मृत्तक के शरीर से ना होकर उसकी आत्मां से होता है। देह त्यागने वाला साधक सार–सब्द ग्रहण करते ही सतगुरू कृपा सूं मोक्ष पथ का पथिक बन जाता है।

5. संस्कार स्थल व मृत्तक के घर में किसी भी आध्यात्मिक व संसारिक वाद विवाद में कोई भी साधक शामिल ना हो। और ना ही उन्हें किसी भी प्रकार का उल्लाहना व सलाह देने की चेष्ठा ना करें।

—0—

6. सतगुरू साहिब जी अगर संग हों तो अति उत्तम अन्यथा आगु साधक नरेंद्र जी की अगुआई में सभी साधक जन तीन बार ''सतगुरू सत्तनाम ! सत्त साहिब जी – सत्त साहिब जी – सत्त साहिब जी'' का मुख से उच्चारण करते हुऐ केवल सामिग्री की एक ही आहुति मृत्त शैया पर डालेंगे। इसके उपरांत परिवार के संबंधि तथा सभी उपस्थित जन आहुति दे सकते हैं।

7. चिता को मुखाग्नि मृत्तक के परिवार से कोई साधक देगा। अगर उनके परिवार में कोई दीक्षित साधक ना हो तो परिवार का कोई भी अन्य सदस्य मुखाग्नि देने के लिये स्वतंत्र है। मृत्तक के परिवार का सदस्य ही मुखाग्नि देगा।

8. अगर साहिब सतगुरू जी उपस्थित हों तो सभी साधकजन सतगुरू जी संग प्रार्थना (सतगुरू जी की आरती) पूर्ण श्रद्धा से करेंगे, अन्यथा आगु साधक नरेंद्र जी की अगुआई में ही प्रार्थना (सतगुरू जी की आरती) की जायेगी।

9. प्रार्थना के उपरांत एक बार ''सतगुरू सत्तनाम ! सत्त साहिब जी–सत्त साहिब जी–सत्त साहिब जी'' तथा साहिब जी कौटि कौटि प्रणाम अपने चरणों में दो स्थान–अपने चरणों में दो स्थान–अपने चरणों में दो स्थान का उच्चारण किया जायेगा।

इसी के साथ घर वाले सभी को धन्यवाद सहित विदा करेंगे।

नोट :–

सहज सत्तमार्ग पद्य्त्ति अनुसार कोई दसवें अर्थात मासिक की रस्म नहीं होगी।

1. तीसरे दिन प्रातः निष्चित किये गये समयानुसार अस्थियां सैंचित्त की जायेंगी। चूंकि इस सृष्टि् के सभी दिन और वार शुभ ही हैं इसलिये दिन और वार का कोई भी विचार नहीं किया जायेगा।

2. अस्थियां सैंचित करने के लिये घर से कपड़े की थैली, सुगंध हेतु धूप, अगरबत्ती तथा गाये का गौबर साथ ले जाना आवश्यक है। पूर्व विधियों अनुसार

किसी धागे, लकड़ी की किल्लियां व अन्य किसी भी प्रकार की वस्तु की आवश्यकता नहीं है।

3. सर्व प्रथम साधक जनों द्वारा अंदर से साहिब जी का आवहान करने के उपरांत प्रार्थना (सतगुरू जी की आरती) की जायेगी, उसके उपरांत अस्थियां सैंचित की जायेंगी।

4. श्मशान घाट से अस्थियां सैंचित करने के उपरांत ये सीधे ही अखनूर स्थित पतित पावन चंद्रभागा (चिनाब) नदी के शुद्ध जल में विसर्जित की जायेंगी।

5. चिनाब नदी पहुंचने पर तीन बार ''सतगुरू सत्तनाम ! सत्त साहिब जी – सत्त साहिब जी – सत्त साहिब जी'' का उच्चारण करके अस्थियां प्रवाहित की जायेंगी। अस्थियां प्रवाहित करने के उपरांत सतगुरू साहिब परमहंस जी व सतपुरूष साहिब जी के प्रेम पूर्वक उद्‌घोष :– साहिब जी कौटि कौटि प्रणाम अपने चरणों में दो स्थान – अपने चरणों में दो स्थान – अपने चरणों में दो स्थान के साथ सभी साधक जन विदा होंगे।

6 सहज सत्त भक्ति मार्ग/परा भक्ति/बृहंगा मत्त पद्यत्ति अनुसार अस्तियां विसर्जन उपरांत किसी भी प्रकार की कोई रस्म होती ही नहीं, (क्युंकि आत्म तो पंच तत्वों से परे है) कोई दिवस मनाना अनिवार्य नहीं होता।

7. फिर भी भावना स्वरूप परिवारिक जन दस दिन व एक वर्ष उपरांत श्रद्धांजली–रस्म सभी साधक–जनों द्वारा उन के घर में साहिब सतगुरू जी का सत्संग **(Audio or Video)** कर सकते हैं। कोई प्रसाद अथ्वा भौज कोई भी साधक ग्रहण नहीं करेंगे, परन्तु घर परिवार वाले अपने दूसरे संबंधियों के लिये भौज ईत्यादि करने के लिये स्वतंत्र हैं। सत्संग के उपरांत ''सतगुरू सत्तनाम ! सत्त साहिब जी – सत्त साहिब जी – सत्त साहिब जी'' का उच्चारण करके व सतगुरू साहिब परमहंस जी व सतपुरूष साहिब जी के प्रेम पूर्वक उद्‌घोष :– साहिब जी कौटि कौटि प्रणाम अपने चरणों में दो स्थान – अपने चरणों में दो स्थान – अपने चरणों में दो स्थान का उच्चारण करते हुऐ सभी साधकजन वहां से विदा होंगे।

—0—